'स्वरचित' - काव्य स्पर्धा

- कवितेचे शीर्षक : - संगीत
- कवी / कवयित्रीचे नाव :- सौ. प्राजक्ता कुलकर्णी

सूरों और भावनाओंकी अभिव्यक्ती है संगीत,
सूरों कि साधना है संगीत |
प्रकृति के कण-कण में बसा संगीत |
देश व भाषा तक ही नहीं सिमित ||

ऋतू बसंत के सूर
आते हैं बहार लेकर,
सूरों कि साधना आरंभ करे
माता शारदा का आशीष पाकर ||

गुन-गुन करते भौरें,
चूं-चूं करती चिडियाँ,
बादल बिजली गरज-गरजकर
अपना संगीत सुनाए |
झिंगूर गाते रात में,
लहरे गाती समुद्र में,
बुंदे छमछम वर्षा में,
वर्षा के संगीत में
सारी सृष्टी नहाए ||

मन की गहराई संगीत नापे,
संगीत की गहराई न कोई,
यह अथांग स्वरोंका समुद्र,
संगीत की सीमा न कोई ||

Prahat Music Therapy

'स्वरचित' - काव्य स्पर्धा

बिन संगीत अधुरा जीवन,
बिन संगीत चंचल मन,
भाव-विभोर हो अंतःकरण,
संगीत है सच्चा धन ||

शुद्ध कोमल स्वर सप्तक
मंद्र, मध्य और तार,
हर स्वर है विशेष
मिलकर देते आनंद अपार ||

एक-एक सूर पिरोकर
बनती है धून सुरीली,
सूर वहीं वाद्य वहीं
हर रचना अद्भुत व निराली ||

संगीत सुनने से
मिटे सब उदासी, तनाव,
संगीत ही रखे स्वस्थ,
शरीर, मन और स्वभाव ||

सप्तसूर और सप्तरंग
मन में उठे भाव-तरंग
हर सूर कुछ कहता है ,
जीने की कला सिखाता है ||

सूर है गीतों का रंगीला सफर
रंग है चित्रो का सुरीला सफर,
रंग बिना चित्र अधुरा, सूर बिना गीत अधुरा
जीने का सूर मिले तो होता है जीवन चित्र पुरा ||

Amarat Music Therapy